BA Part II History (Hons) IV Th Paper.

नेपोलियन के उत्थान का वर्णन करें।

Ans:— नेपोलियन बोनापार्ट विश्व के सर्वाधिक महान सेनाध्यक्षों में एक था। वह निर्विवाद रूप से आधुनिक युग का महान व्यक्ति तथा यूरोप के इतिहास में युग निर्माता था। वह एक असाधारण मस्तिष्क तथा चरित्र का धनी था, जो किसी भी परिस्थिति अथवा किसी भी देश में उच्च स्थान प्राप्त करता। विख्यात दार्शनिक एवं राजनीतिक रूसो ने सन् 1762 ई० में लिखा था — "कि मुझे पूर्वाभास हो गया है कि यह छोटा सा द्वीप कोर्सिका एक दिन यूरोप को आश्चर्यचकित करेगा।"

नेपोलियन के पूर्वज मूलरूप से इटलीवासी थे, लेकिन 16वीं सदी में फ्रांस के दक्षिण में भूमध्यसागर में स्थित एक छोटे से द्वीप कोर्सिका में स्थायी रूप से बस गए थे। यह द्वीप इटली में स्थित जिनोआ के अधीन था किन्तु नेपोलियन के जन्म से पहले जिनोआ ने यह द्वीप फ्रांस को दे दिया था।

नेपोलियन का जन्म 15 अगस्त 1769 ई० में कोर्सिका द्वीप के अजासियो नगर में वकील कार्लो बोनापार्ट एवं माता लेटीजिया रमोलिनो के यहाँ हुआ था। वह बचपन से ही एकाकी जीवन व्यतीत करता, भूमि पर रेखाएँ खींचता अथवा दुर्ग बनाता और तोड़ता रहता था।

नेपोलियन की आरंभिक शिक्षा पेरिस के सैनिक विद्यालयों में हुई थी उसने पाठ्यक्रम के विषयों के अतिरिक्त 18वीं सदी के विद्रोह का उत्तेजनात्मक एवं तत्कालीन बुद्धिवादी विचारकों तथा दार्शनिकों की महान कृतियों का अध्ययन किया। वह हीनभावना से ग्रस्त, आर्थिक दरिद्रता से दुखी एवं निराश तथा उच्च कुलीन परिवार में जन्म ना लेने की मानसिकता से ग्रस्त था।

नेपोलियन ने केवल 17 वर्ष की आयु में अपना सैनिक जीवन आरंभ किया। उसके नेतृत्व में फ्रांस ने युद्धों में यूरोप में पहली बार सनसनी पैदा

की ओर गमी से चरमोत्कर्ष तक पहुंचाने के लिए अभियान आरंभ हुआ।

नेपोलियन की इच्छा थी कि डायरेक्टरी शासन उसे आस्ट्रिया के विरुद्ध सैनिक कारवाई करने के लिए इटली जाने की अनुमति दे और वे अनुमति उसे मिल भी गई। नेपोलियन 1796 ई० अपनी प्रथम इटालवी अभियान पर चल निकला। इस में नेपोलियन विजयी हुआ और फ्रांस विरोधी यूरोपीय राज्यों का प्रथम गुट टूट गया साथ ही नेपोलियन का यश यूरोप पर छा गया।

केवल इंगलैंड ही ऐसा देश था, जो फ्रांस के विरुद्ध टिका हुआ था और इंगलैंड को हराना कठिन था क्यों कि फ्रांस की नौसेना इंगलैंड से कमजोर थी। अतः नेपोलियन ने इंगलैंड को भारत में पराजित करने की योजना बनाई और एक विशाल सेना लेकर फ्रांस से रवाना हुआ। जब अंग्रेजों को इस योजना की भनक लगी तो उन्होंने नेपोलियन के मनसूबों को चकनाचूर करने के उद्देश्य से एडमिरल नेलशन को भेजा। नील नदी के मुहाने पर इन दोनों में भिड़ंत हुई और नेपोलियन बुरी तरह से हार गया। निराश हो कर कुछ दिनों तक एलेक्जेंडरिया में बैठा रहा। किन्तु जब फ्रांस की कठिनाईयों की खबर उस तक पहुँची तब वह स्वदेश लौटने के लिए आतुर हो उठा।

09 अक्टूबर 1799 ई० को वह पेरिस पहुंचा। डायरेक्टरी के भ्रष्ट अयोग्य और अकुशल शासन से वहाँ की जनता असन्तुष्ट थी अतः वे ऐसे किसी योग्य व्यक्ति को देश का नेता बनाना चाहते थे जो इन्हें कठिनाईयों से छुटकारा दिला देता। नेपोलियन ने फ्रांसीसियों की इस मनोभाव का फायदा उठाया और कुछ सैन्य अधिकारियों से मिल कर डायरेक्टरी के शासन को अन्त करने का निश्चय किया। अपनी

तैयारियाँ पूरी करने के बाद Nov 1799 ई० को उसने डायरेक्टरी शासन का तख्ता पलट दिया और फ्रांस की व्यवस्थापिका में एक प्रस्ताव पारित करके नेपोलियन को प्रथम काउंसिल के पद पर नियुक्त किया। नेपोलियन ने अपने विरोधियों को कुचल दिया और अपना स्वेच्छाचारी शासन स्थापित किया।

1802 ई० में नेपोलियन ने प्रगति के मार्ग में दूसरा कदम उठाया। एक जनमत संग्रह द्वारा नेपोलियन का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया कि वह फ्रांस के काउंसिल के पद पर आजीवन बना रहे। नेपोलियन को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने का भी अधिकार मिला लेकिन वह फ्रांस का सम्राट बनना चाहता था।

1804 ई० उसने परिस्थिति को ऐसा मोड़ दिया कि सीनेट को उसे फ्रांसीसीयों का सम्राट घोषित करना पड़ा। इसके राज्याभिषेक के समय पवित्र रोमन साम्राज्य के सर्वोच्च धर्माधिकारी पोप को आशीर्वाद देने के लिए आमंत्रित किया गया। किन्तु अंतिम समय में राजमुकुट स्वयं अपने हाथों से अपने सिर पर रख लिया। इस प्रकार राज्याभिषेक के कार्यों में ही पोप का निरादर किया गया।

इस विशिष्ट घटना ने सभी यूरोप वासियों को नैतिक आघात पहुँचाया। उसमें अभूतपूर्व शक्ति, आत्म-विश्वास, निर्भिकता, चतुरता तथा साधन सम्पन्नता थी। वह बाल्यकाल से ही विश्वास करता था कि कोई अन्तर्निहित शक्ति विजय तथा गौरव के लिए उसका मार्ग-दर्शन कर रही है। इस दृष्टि से वह भाग्यवादी था। उसकी स्मरण शक्ति भी विलक्षण थी।

जीवन के अन्तिम क्षण तक वह अपने अहंवाद तथा स्वार्थपरता पर नियंत्रण नहीं कर सका। उसके व्यक्तिगत गुण दोषों का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि वह अत्यधिक अतिविस्तार से ग्रस्त था।

नेपोलियन के इतिहास में इस तरह व्यक्त कर सकते हैं कि वह यूरोपीय इतिहास का कोई साधारण व्यक्ति नहीं था, जिसको इतिहास के अतुल भण्डार में समाहित कर दिया जाए। वह अपने युग का अद्वितीय विभूति था। उसके अन्दर निहित किसी अज्ञात दैवीक शक्ति ने उसको प्रेरित तथा उद्वेलित किया और यूरोप के मंच पर दो दशक तक प्रभुत्व स्थापित करने में समर्थ बनाया। असफलता के उपरान्त भी उसने एक अमूल्य पैतृक निधि छोड़ी जिसने यूरोप के इतिहास के स्वरूप तथा चेतना को ही बदल दिया।

—— X ——